

युवा पीढ़ी एवं भारतीय सांस्कृतिक मूल्यः वैश्वीकरण के प्रभाव का समाजशास्त्रीय अध्ययन

रंजू सिंह

सहायक प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, सौभाग्यवती बाईदानी महिला महाविद्यालय,
धामपुर, बिजनौर (उत्तर प्रदेश)

E-mail: <ranjusinghrajput90@gmail.com>

सारांश

वैश्वीकरण वर्तमान समय की एक महत्वपूर्ण सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं तकनीकी प्रक्रिया है, जिसने विश्व के विभिन्न समाजों को एक-दूसरे के निकट ला दिया है। संचार क्रान्ति, इण्टरनेट, सोशल मीडिया, उपभोक्तावाद, वैश्विक शिक्षा, रोजगार के अवसर तथा पश्चिमी जीवन-शैली के प्रसार ने विशेष रूप से युवा पीढ़ी के सामाजिक एवं सांस्कृतिक व्यवहार को प्रभावित किया है। भारतीय समाज में युवा वर्ग परिवर्तन का प्रमुख वाहक माना जाता है। एक ओर वैश्वीकरण ने युवाओं को नई शिक्षा, रोजगार, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, व्यक्तिगत स्वतन्त्रता एवं वैश्विक स्तर पर संवाद के अवसर प्रदान किए हैं, वहीं दूसरी ओर पारम्परिक भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के स्वरूप में भी परिवर्तन दिखाई देता है। भारतीय संस्कृति में परिवार, बड़ों का सम्मान, सामूहिकता, सह-अस्तित्व, नैतिकता, धार्मिक एवं सामाजिक परम्पराएँ, लोकाचार, भाषा तथा पारस्परिक सहयोग जैसे मूल्य महत्वपूर्ण रहे हैं। वैश्वीकरण के प्रभाव से इन मूल्यों का पूर्णतः लोप नहीं हुआ है, बल्कि इनके स्वरूप, अभिव्यक्ति एवं सामाजिक महत्व में परिवर्तन आया है। संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर बढ़ती प्रवृत्ति, व्यक्तिगत स्वतन्त्रता पर बढ़ता जोर, उपभोक्तावादी संस्कृति, पहनावे एवं खान-पान में परिवर्तन तथा डिजिटल संस्कृति का विस्तार इसके उदाहरण हैं। साथ ही, भारतीय युवा योग, भारतीय संगीत, त्योहारों, भारतीय भाषाओं एवं सांस्कृतिक पहचान के विभिन्न रूपों से भी जुड़े हुए हैं। प्रस्तुत अध्ययन समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से युवा पीढ़ी तथा भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के बीच बदलते सम्बन्धों को समझने का प्रयास करता है। अध्ययन में द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। इसका उद्देश्य वैश्वीकरण को केवल सांस्कृतिक क्षरण अथवा सांस्कृतिक विकास के रूप में देखने के बजाय उसके बहुआयामी प्रभावों का विश्लेषण करना है।

प्रमुख शब्द

[युवा पीढ़ी, भारतीय संस्कृति, सांस्कृतिक मूल्य, वैश्वीकरण, समाजशास्त्र, उपभोक्तावाद, सोशल मीडिया, सांस्कृतिक परिवर्तन।]

Centre For Studies of National Development, Meerut

Editorial Office : D-59, Shastri Nagar, Meerut - 250 004 (INDIA)

Ph. : 0121-2763765, +91-9997771669, +91-9412200765

10

युवा पीढ़ी एवं भारतीय सांस्कृतिक मूल्यः वैश्वीकरण के प्रभाव का समाजशास्त्रीय अध्ययन

1. प्रस्तावना

समाज निरन्तर परिवर्तनशील है। प्रत्येक समाज में होने वाले सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा तकनीकी परिवर्तनों के साथ उसके सांस्कृतिक स्वरूप में भी निरन्तर परिवर्तन होता रहता है। भारतीय समाज अपनी विविधता, बहुलता एवं दीर्घकालीन सांस्कृतिक परम्पराओं के लिए जाना जाता है। भारतीय संस्कृति में परिवार, सामाजिक एकता, सह-अस्तित्व, परस्पर सहयोग, बड़ों का सम्मान, अतिथि-सत्कार, धार्मिक सहिष्णुता एवं नैतिक जीवन जैसे मूल्यों का विशेष स्थान रहा है। ये मूल्य लम्बे समय से भारतीय सामाजिक जीवन, पारिवारिक सम्बन्धों एवं सामुदायिक व्यवहार को प्रभावित करते रहे हैं।

इक्कीसवीं शताब्दी में वैश्वीकरण ने सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन की गति को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। इण्टरनेट, मोबाइल फोन, सोशल मीडिया, अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा, वैश्विक बाजार, बहुराष्ट्रीय कम्पनियों तथा मनोरंजन के वैश्विक माध्यमों ने युवाओं को विश्व के विभिन्न समाजों की जीवन-शैलियों, विचारों एवं सांस्कृतिक प्रथाओं से परिचित कराया है। इसके परिणामस्वरूप युवा पीढ़ी के सोचने, पहनने, खाने, मनोरंजन करने, शिक्षा प्राप्त करने तथा करियर का चयन करने के तरीकों में परिवर्तन दिखाई देता है। वैश्विक सम्पर्क ने युवाओं के लिए ज्ञान, संचार एवं अभिव्यक्ति के नए अवसर भी उपलब्ध कराए हैं, जबकि इसके साथ पारम्परिक सांस्कृतिक मूल्यों एवं जीवन-शैली के समक्ष नई चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं।

युवा किसी भी समाज का महत्वपूर्ण सामाजिक समूह होता है। युवा न केवल वर्तमान सामाजिक व्यवस्था का हिस्सा होते हैं, बल्कि भविष्य के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक स्वरूप को भी प्रभावित करते हैं। इस दृष्टि से युवा पीढ़ी के विचारों, व्यवहारों एवं मूल्य-प्रतिमानों में होने वाले परिवर्तन का अध्ययन समाज के व्यापक परिवर्तन को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विशेष रूप से भारतीय सन्दर्भ में यह प्रश्न महत्वपूर्ण हो जाता है कि वैश्विक सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभावों के बीच युवा पारम्परिक भारतीय मूल्यों को किस प्रकार ग्रहण, बनाए या परिवर्तित कर रहे हैं।

वैश्वीकरण एवं भारतीय संस्कृति का सम्बन्ध केवल पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव तक सीमित नहीं है। वैश्वीकरण एक ऐसी बहुआयामी प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से विभिन्न समाज एवं संस्कृतियाँ निरन्तर सम्पर्क, अन्तर्क्रिया एवं आदान-प्रदान की प्रक्रिया से गुजरती हैं। इस प्रक्रिया में सांस्कृतिक प्रभाव एकतरफा न होकर पारस्परिक भी हो सकते हैं। अतः यह अध्ययन करना आवश्यक है कि भारतीय युवा वैश्विक सांस्कृतिक प्रभावों को किस प्रकार स्वीकार करते हैं, किन भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को बनाए रखते हैं तथा किन मूल्यों को बदलते सामाजिक सन्दर्भ में पुनर्परिभाषित करते हैं। इसी सन्दर्भ में युवा पीढ़ी तथा भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के बीच बदलते सम्बन्धों का समाजशास्त्रीय अध्ययन समकालीन भारतीय समाज में हो रहे व्यापक सांस्कृतिक परिवर्तन को समझने के लिए महत्वपूर्ण है।

2. वैश्वीकरण के प्रभाव के समाजशास्त्रीय विश्लेषण की आवश्यकता

भारतीय समाज पर प्रभाव डालने वाली प्रक्रियाओं में सर्वाधिक नवीन एवं प्रभावशाली प्रक्रिया वैश्वीकरण है। वैश्वीकरण का सामान्य अर्थ विभिन्न देशों, समाजों एवं संस्कृतियों के बीच बढ़ते आर्थिक,

सामाजिक, तकनीकी एवं सांस्कृतिक सम्बन्धों से है। वैश्वीकरण ने दुनिया को भौगोलिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि संचार एवं सूचना के स्तर पर भी अधिक निकट बनाया है। पूर्व में किसी दूसरे देश की संस्कृति के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए पुस्तकों, यात्राओं अथवा सीमित संचार माध्यमों पर निर्भर रहना पड़ता था। आज इण्टरनेट एवं सोशल मीडिया के माध्यम से युवा कुछ ही क्षणों में विभिन्न देशों की भाषा, संगीत, फैशन, भोजन, मनोरंजन एवं जीवन-शैली से परिचित हो जाते हैं। इस प्रकार, वैश्वीकरण ने सांस्कृतिक सम्पर्क को तीव्र किया है। इससे सांस्कृतिक आदान-प्रदान की सम्भावनाएँ बढ़ी हैं, लेकिन, साथ ही, स्थानीय सांस्कृतिक परम्पराओं के सामने नई चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं।

वैश्वीकरण का अध्ययन समाजशास्त्र में इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इसने सामाजिक सम्बन्धों, संस्थाओं, जीवन-शैली, संस्कृति, अर्थव्यवस्था एवं पहचान के स्वरूप में व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। वैश्विक संचार, तकनीकी विकास, प्रवासन, बाजार एवं मीडिया ने विभिन्न समाजों को पहले की अपेक्षा अधिक निकटता से जोड़ दिया है, जिसके परिणामस्वरूप स्थानीय एवं वैश्विक प्रक्रियाओं के बीच निरन्तर अन्तर्क्रिया बढ़ी है। वैश्वीकरण ने जहाँ नए अवसर, सामाजिक गतिशीलता एवं सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा दिया है, वहीं सामाजिक असमानता, उपभोक्तावाद, सांस्कृतिक समरूपीकरण, डिजिटल विभाजन एवं स्थानीय पहचान से सम्बन्धित नई चुनौतियाँ भी उत्पन्न की हैं। अतः समाजशास्त्रीय दृष्टि से वैश्वीकरण का अध्ययन यह समझने के लिए आवश्यक है कि वैश्विक परिवर्तन विभिन्न सामाजिक वर्गों, समुदायों, लिंगों एवं क्षेत्रों को किस प्रकार प्रभावित करते हैं तथा व्यक्ति एवं समाज इन परिवर्तनों के प्रति किस प्रकार अनुकूलन, प्रतिरोध एवं पुनर्संरचना की प्रक्रियाएँ अपनाते हैं।

समाजशास्त्र में हमें यह याद रखना चाहिए कि समाजशास्त्रीय दृष्टि से वैश्वीकरण को केवल बाहरी या पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव के रूप में समझना पर्याप्त नहीं है। युवा केवल वैश्विक सांस्कृतिक प्रभावों के निष्क्रिय ग्रहणकर्ता नहीं हैं, बल्कि वे सांस्कृतिक परिवर्तन के सक्रिय सहभागी एवं वाहक भी हैं। वे वैश्विक विचारों, जीवन-शैलियों एवं तकनीकों को स्थानीय संस्कृति, पारिवारिक मूल्यों तथा अपनी सामाजिक परिस्थितियों के साथ जोड़कर उन्हें नए अर्थ एवं स्वरूप प्रदान करते हैं। इस प्रक्रिया में न तो पारम्परिक संस्कृति पूरी तरह समाप्त होती है तथा न ही वैश्विक संस्कृति को उसी रूप में स्वीकार किया जाता है; बल्कि दोनों के बीच अन्तर्क्रिया, अनुकूलन एवं पुनर्संरचना की प्रक्रिया चलती रहती है।

उदाहरण के लिए, भारतीय युवा आधुनिक डिजिटल तकनीक एवं सोशल मीडिया का उपयोग पारम्परिक त्योहारों, लोककलाओं तथा सांस्कृतिक परम्पराओं के प्रचार-प्रसार के लिए कर रहे हैं। इसी प्रकार, भारतीय भोजन, परिधान एवं सांस्कृतिक प्रतीकों को वैश्विक बाजार एवं डिजिटल माध्यमों के अनुरूप नए रूपों में प्रस्तुत किया जा रहा है। इससे स्पष्ट होता है कि वैश्वीकरण सांस्कृतिक परिवर्तन को केवल एकतरफा दिशा में प्रभावित नहीं करता, बल्कि स्थानीय एवं वैश्विक सांस्कृतिक तत्वों के बीच निरन्तर अन्तर्क्रिया को बढ़ावा देता है। इस अन्तर्क्रिया के परिणामस्वरूप संकर (Hybrid) सांस्कृतिक रूपों का विकास होता है, जिनमें परम्परा एवं आधुनिकता के विभिन्न तत्व एक साथ दिखाई दे सकते हैं। अतः युवा पीढ़ी को भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के क्षरण के मात्र कारण के रूप में देखने के बजाय उसे बदलते सांस्कृतिक सन्दर्भ में मूल्यों के पुनर्निर्माण एवं पुनर्व्याख्या की प्रक्रिया के सक्रिय सहभागी के रूप में समझना अधिक उपयुक्त है।

3. अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार हैं—

1. भारतीय युवा पीढ़ी पर वैश्वीकरण के सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभावों का अध्ययन करना।
2. भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के बदलते स्वरूप को समझना।
3. युवाओं की जीवन-शैली में आए परिवर्तनों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना।
4. वैश्वीकरण एवं भारतीय पारिवारिक मूल्यों के बीच सम्बन्ध का अध्ययन करना।

5. सोशल मीडिया एवं डिजिटल तकनीक की भूमिका को समझना।
6. वैश्वीकरण से उत्पन्न सांस्कृतिक अवसरों एवं चुनौतियों का विश्लेषण करना।
7. यह समझना कि युवा आधुनिकता एवं परम्परा के बीच किस प्रकार सन्तुलन स्थापित कर रहे हैं।

4. अध्ययन की पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। अध्ययन के लिए मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। पुस्तकों, शोध-पत्रों, सरकारी रिपोर्टों, समाजशास्त्रीय साहित्य तथा वैश्वीकरण एवं युवा संस्कृति से सम्बन्धित उपलब्ध सामग्री का अध्ययन किया गया है। अध्ययन में समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से वैश्वीकरण, सांस्कृतिक परिवर्तन, आधुनिकीकरण, उपभोक्तावाद, समाजीकरण तथा सांस्कृतिक पहचान जैसी अवधारणाओं का उपयोग किया गया है।

5. भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों की अवधारणा

भारतीय संस्कृति अनेक परम्पराओं एवं सामाजिक समूहों का समन्वित रूप है। भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को किसी एक धार्मिक या सामाजिक परम्परा तक सीमित नहीं किया जा सकता। इनमें विभिन्न समुदायों, भाषाओं, क्षेत्रों एवं ऐतिहासिक अनुभवों का योगदान रहा है। भारतीय सामाजिक जीवन में निम्नलिखित सांस्कृतिक मूल्यों को विशेष महत्त्व प्राप्त रहा है—

1. **परिवार का महत्त्व**—भारतीय समाज में परिवार समाजीकरण की प्राथमिक संस्था रहा है। परिवार के माध्यम से बच्चों को भाषा, व्यवहार, परम्परा, नैतिकता एवं सामाजिक जिम्मेदारियों का ज्ञान प्राप्त होता है।
2. **बड़ों का सम्मान**—भारतीय सामाजिक जीवन में माता-पिता, गुरु एवं बुजुर्गों के प्रति सम्मान की परम्परा महत्त्वपूर्ण रही है। आधुनिक जीवन में इसके व्यवहारिक स्वरूप में परिवर्तन दिखाई देता है, लेकिन इसका सामाजिक महत्त्व अभी भी अनेक परिवारों में बना हुआ है।
3. **सामूहिकता**—भारतीय समाज में व्यक्तिगत हित के साथ-साथ परिवार एवं समुदाय के हित को भी महत्त्व दिया जाता रहा है। सामूहिक निर्णय, पारिवारिक सहयोग तथा सामाजिक सम्बन्ध इसकी अभिव्यक्तियाँ हैं।
4. **सह-अस्तित्व एवं सहिष्णुता**—भारत की सामाजिक विविधता के कारण विभिन्न धर्मों, भाषाओं, जातीय समूहों एवं सांस्कृतिक परम्पराओं के साथ रहने की सामाजिक क्षमता भारतीय संस्कृति की महत्त्वपूर्ण विशेषता रही है।
5. **नैतिक एवं सामाजिक उत्तरदायित्व**—सत्य, अहिंसा, दया, सहयोग, सेवा तथा सामाजिक जिम्मेदारी जैसे मूल्यों का भारतीय चिन्तन में महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है।

6. युवा पीढ़ी एवं वैश्वीकरण

युवा वर्ग वैश्वीकरण के प्रभाव को सबसे तेजी से अनुभव करने वाला सामाजिक समूह है। शिक्षा, रोजगार, इण्टरनेट एवं सोशल मीडिया के कारण युवाओं का सम्पर्क स्थानीय समाज से आगे बढ़कर राष्ट्रीय एवं वैश्विक समाज तक हो गया है। आज का युवा अपनी पहचान को केवल स्थानीय या पारिवारिक सन्दर्भ में नहीं देखता, बल्कि वह स्वयं को एक व्यापक वैश्विक समुदाय का हिस्सा भी समझ सकता है। इससे उसके विचारों, आकांक्षाओं एवं जीवन-शैली में परिवर्तन आता है। युवाओं के लिए करियर, व्यक्तिगत स्वतन्त्रता, समानता, लैंगिक भूमिकाएँ, शिक्षा एवं जीवन-साथी के चयन जैसे विषयों के प्रति दृष्टिकोण में भी परिवर्तन दिखाई देता है। हालाँकि इन परिवर्तनों की प्रकृति क्षेत्र, वर्ग, शिक्षा, परिवार एवं सामाजिक पृष्ठभूमि के अनुसार अलग-अलग हो सकती है। भारतीय युवा पीढ़ी पर वैश्वीकरण के प्रमुख सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभाव इस प्रकार हैं—

6.1 वैश्वीकरण का भारतीय पारिवारिक मूल्यों पर प्रभाव

वैश्वीकरण का भारतीय परिवार एवं पारिवारिक मूल्यों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। नगरीकरण, रोजगार के लिए स्थानान्तरण तथा बदलती जीवन-शैली के कारण अनेक परिवारों में संयुक्त परिवार की अपेक्षा एकल परिवार का महत्व बढ़ा है। युवा पीढ़ी शिक्षा एवं रोजगार के अवसरों की तलाश में अपने जन्मस्थान से दूसरे नगरों अथवा देशों की ओर जा रही है। इसके परिणामस्वरूप पारिवारिक सदस्यों के बीच भौगोलिक निकटता कम हो सकती है तथा पारम्परिक पारिवारिक अन्तर्क्रियाओं के स्वरूप में परिवर्तन दिखाई दे सकता है। दूसरी ओर, डिजिटल संचार माध्यमों ने दूर रहने वाले परिवार के सदस्यों के बीच निरन्तर सम्पर्क बनाए रखना सम्भव बनाया है। अतः यह कहना अधिक उचित होगा कि वैश्वीकरण के कारण परिवार समाप्त नहीं हो रहा है, बल्कि उसके स्वरूप, पारिवारिक सम्बन्धों तथा पारस्परिक अन्तर्क्रिया के तरीकों में परिवर्तन हो रहा है।

6.2 सोशल मीडिया एवं युवा संस्कृति

सोशल मीडिया वैश्वीकरण का सबसे प्रभावशाली माध्यम बन गया है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के माध्यम से युवा देश-विदेश के लोगों, विचारों एवं संस्कृतियों से सम्पर्क स्थापित करते हैं। इसके कुछ प्रमुख प्रभाव इस प्रकार हैं—

- वैश्विक फैशन एवं जीवन-शैली का प्रसार।
- विभिन्न भाषाओं एवं संस्कृतियों की जानकारी।
- नए प्रकार के मनोरंजन का विकास।
- सामाजिक एवं राजनीतिक मुद्दों पर जागरूकता।
- ऑनलाइन शिक्षा एवं रोजगार के अवसर।
- व्यक्तिगत अभिव्यक्ति के नए माध्यम।

इसके साथ ही, सोशल मीडिया पर अत्यधिक निर्भरता, आभासी सामाजिक सम्बन्ध, तुलना की प्रवृत्ति तथा उपभोक्तावादी जीवन-शैली को बढ़ावा मिलने जैसी सामाजिक चुनौतियों पर भी विचार किया जाना आवश्यक है।

6.3 वैश्वीकरण एवं भारतीय भाषा

भाषा संस्कृति की महत्वपूर्ण पहचान है। वैश्वीकरण एवं डिजिटल संचार के कारण भारतीय युवाओं के भाषायी व्यवहार में भी परिवर्तन आया है। अंग्रेजी तथा अन्य वैश्विक भाषाओं का शिक्षा, रोजगार एवं तकनीकी क्षेत्र में महत्व बढ़ा है। इसके परिणामस्वरूप अनेक युवा हिन्दी या अन्य भारतीय भाषाओं के साथ अंग्रेजी के शब्दों का मिश्रित प्रयोग करते हैं। सोशल मीडिया एवं डिजिटल संचार ने इस प्रक्रिया को और बढ़ाया है। हालाँकि इसका अर्थ भारतीय भाषाओं का पूर्णतः समाप्त होना नहीं है। इण्टरनेट ने भारतीय भाषाओं में सामग्री तैयार करने तथा साझा करने के नए अवसर भी पैदा किए हैं। इस प्रकार, तकनीक भारतीय भाषाओं के लिए चुनौती के साथ-साथ अवसर भी प्रस्तुत करती है।

6.4 पहनावे एवं खान-पान में परिवर्तन

वैश्वीकरण के प्रभाव से युवाओं के पहनावे एवं खान-पान की आदतों में स्पष्ट परिवर्तन देखा जा सकता है। वैश्विक फैशन, ब्राण्ड संस्कृति एवं अन्तर्राष्ट्रीय खाद्य पदार्थों की उपलब्धता ने युवा जीवन-शैली को प्रभावित किया है। फिर भी, भारतीय पारम्परिक वस्त्र, भोजन एवं त्योहार पूरी तरह समाप्त नहीं हुए हैं। विवाह, धार्मिक समारोह, पारिवारिक कार्यक्रम एवं त्योहारों में पारम्परिक पहनावे तथा भारतीय भोजन का प्रयोग आज भी व्यापक रूप से दिखाई देता है। इससे स्पष्ट होता है कि युवा वर्ग वैश्विक एवं स्थानीय दोनों सांस्कृतिक तत्वों को अपने जीवन में सम्मिलित कर सकता है।

6.5 उपभोक्तावाद एवं युवा पीढ़ी

उपभोक्तावाद का अर्थ वस्तुओं एवं सेवाओं के अधिकाधिक उपभोग तथा खरीद को जीवन की आवश्यकता, सुविधा एवं सफलता का महत्वपूर्ण आधार मानने की प्रवृत्ति है। सरल शब्दों में, जरूरत से अधिक वस्तुओं की खरीद एवं भौतिक सुख-सुविधाओं को प्राथमिकता देना उपभोक्तावाद कहलाता है। वैश्वीकरण ने बाजार को अधिक विस्तृत बनाया है तथा उपभोक्तावाद में वृद्धि हुई है। विज्ञापन, ई-कॉमर्स, ब्राण्ड संस्कृति एवं डिजिटल मार्किटिंग ने युवाओं की उपभोग सम्बन्धी इच्छाओं को प्रभावित किया है। युवा वर्ग में मोबाइल फोन, फैशन, मनोरंजन, पर्यटन एवं अन्य उपभोक्ता वस्तुओं के प्रति आकर्षण बढ़ा है। सामाजिक प्रतिष्ठा को वस्तुओं एवं ब्राण्डों से जोड़ने की प्रवृत्ति भी कुछ सन्दर्भों में दिखाई देती है। समाजशास्त्रीय दृष्टि से उपभोक्तावाद केवल आर्थिक व्यवहार नहीं है; यह सामाजिक पहचान एवं जीवन-शैली से भी जुड़ जाता है। इसलिए युवा संस्कृति को समझने में उपभोक्तावाद एक महत्वपूर्ण अवधारणा बन जाता है।

6.6 शिक्षा एवं रोजगार पर वैश्वीकरण का प्रभाव

वैश्वीकरण ने युवाओं के लिए शिक्षा एवं रोजगार के नए अवसर उपलब्ध कराए हैं। ऑनलाइन शिक्षा, अन्तर्राष्ट्रीय पाठ्यक्रम, विदेशी विश्वविद्यालयों से सम्पर्क, बहुराष्ट्रीय कम्पनियों तथा डिजिटल रोजगार ने युवाओं की आकांक्षाओं का विस्तार किया है। आज युवा केवल स्थानीय रोजगार तक सीमित नहीं है। वह राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर रोजगार के अवसरों की तलाश कर सकता है। इसके साथ ही प्रतिस्पर्धा भी बढ़ी है। रोजगार के लिए आवश्यक कौशल, अंग्रेजी भाषा, तकनीकी ज्ञान एवं डिजिटल दक्षता का महत्व बढ़ गया है। इस प्रकार, वैश्वीकरण युवाओं के लिए अवसर एवं प्रतिस्पर्धा दोनों लेकर आया है।

6.7 लैंगिक भूमिकाओं में परिवर्तन

वैश्वीकरण एवं आधुनिक शिक्षा के प्रभाव से युवा पुरुषों एवं महिलाओं की पारम्परिक भूमिकाओं के सम्बन्ध में भी परिवर्तन दिखाई देता है। महिलाओं की शिक्षा, रोजगार, आर्थिक स्वतन्त्रता तथा निर्णय लेने में भागीदारी को अधिक महत्व मिलने लगा है। युवा पीढ़ी में पति-पत्नी के बीच साझेदारी, शिक्षा एवं करियर के प्रति समर्थन एवं घरेलू जिम्मेदारियों के बंटवारे के विचार को अधिक स्वीकृति मिल सकती है। हालाँकि पारम्परिक लैंगिक भूमिकाएँ भारतीय समाज के अनेक हिस्सों में अभी भी प्रभावशाली हैं। इसलिए इस परिवर्तन को एक समान राष्ट्रीय प्रक्रिया के रूप में नहीं देखा जा सकता।

6.8 त्योहार एवं परम्पराएँ: परिवर्तन या पुनर्परिभाषा

वैश्वीकरण के कारण यह धारणा बन सकती है कि युवा पारम्परिक त्योहारों से दूर हो रहे हैं। लेकिन वास्तविक स्थिति अधिक जटिल है। अनेक त्योहार आज सोशल मीडिया, डिजिटल शुभकामनाओं, ऑनलाइन कार्यक्रमों एवं नए प्रकार के सार्वजनिक आयोजनों के माध्यम से मनाए जाते हैं। इस प्रकार, परम्परा समाप्त होने के बजाय नए माध्यमों के साथ जुड़ रही है। युवा पारम्परिक त्योहारों को आधुनिक संगीत, फैशन, डिजिटल मीडिया तथा नए सामाजिक आयोजनों के साथ जोड़ते हैं। इसे सांस्कृतिक पुनर्परिभाषा (Cultural reinterpretation) के रूप में समझा जा सकता है।

6.9 वैश्वीकरण एवं भारतीय सांस्कृतिक पहचान

सांस्कृतिक पहचान व्यक्ति को यह समझने में सहायता करती है कि वह किस सामाजिक एवं सांस्कृतिक समुदाय से सम्बन्धित है। वैश्वीकरण के कारण युवा एक-साथ अनेक सांस्कृतिक पहचानों से जुड़ सकता है। उदाहरण के लिए, कोई युवा भारतीय पारिवारिक परम्पराओं का पालन करते हुए वैश्विक संगीत सुन सकता है, आधुनिक फैशन अपना सकता है, अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा प्राप्त कर सकता है तथा फिर भी भारतीय त्योहारों में सक्रिय रूप से भाग ले सकता है। इससे पता चलता है कि वैश्विक एवं स्थानीय संस्कृति को हमेशा एक-दूसरे का विरोधी मानना उचित नहीं है। दोनों के बीच सांस्कृतिक समन्वय की प्रक्रिया भी हो सकती है।

6.10 वैश्वीकरण के सकारात्मक प्रभाव

युवा पीढ़ी पर वैश्वीकरण के कुछ प्रमुख सकारात्मक प्रभाव निम्नलिखित हैं—

- शिक्षा के अवसरों में विस्तार।
- रोजगार एवं करियर के नए अवसर।
- वैज्ञानिक एवं तार्किक दृष्टिकोण का विकास।
- विभिन्न संस्कृतियों की समझ में वृद्धि।
- महिलाओं की शिक्षा एवं रोजगार के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण।
- वैश्विक संचार एवं ज्ञान तक पहुँच।
- नई तकनीकी एवं व्यावसायिक दक्षताओं का विकास।
- व्यक्तिगत अभिव्यक्ति के नए अवसर।
- विभिन्न सामाजिक समूहों के बीच संवाद की सम्भावना।

6.11 वैश्वीकरण के नकारात्मक प्रभाव

युवा पीढ़ी पर वैश्वीकरण के कुछ प्रमुख नकारात्मक प्रभाव निम्नलिखित हैं—

- पारम्परिक मूल्यों एवं सांस्कृतिक पहचान में कमी।
- उपभोक्तावादी प्रवृत्तियों एवं भौतिकवाद में वृद्धि।
- पश्चिमी जीवन-शैली का बढ़ता प्रभाव।
- स्थानीय भाषा, कला एवं परम्पराओं के प्रति उदासीनता।
- सामाजिक एवं पारिवारिक सम्बन्धों में दूरी की सम्भावना।
- बेरोजगारी एवं रोजगार में बढ़ती प्रतिस्पर्धा का दबाव।
- डिजिटल तकनीक एवं सोशल मीडिया पर अत्यधिक निर्भरता।
- जीवन में तनाव, अकेलेपन एवं मानसिक दबाव में वृद्धि।
- आर्थिक एवं सामाजिक असमानताओं के बढ़ने की सम्भावना।
- युवाओं में दिखावे एवं त्वरित सफलता की प्रवृत्ति में वृद्धि।
- स्थानीय रोजगार एवं पारम्परिक व्यवसायों पर प्रतिकूल प्रभाव।
- सांस्कृतिक एकरूपता के कारण स्थानीय विविधताओं का क्षरण।

6.12 वैश्वीकरण की प्रमुख चुनौतियाँ

वैश्वीकरण के साथ कुछ सामाजिक एवं सांस्कृतिक चुनौतियाँ भी जुड़ी हैं—

- पारम्परिक सामाजिक सम्बन्धों में परिवर्तन।
- अत्यधिक उपभोक्तावादी दृष्टिकोण।
- स्थानीय संस्कृति एवं लोक परम्पराओं के सामने चुनौतियाँ।
- डिजिटल माध्यमों पर अत्यधिक निर्भरता।
- पारिवारिक संवाद में कमी की सम्भावना।

- सांस्कृतिक एकरूपता का विस्तार।
- स्थानीय भाषाओं के प्रयोग में कमी की सम्भावना।
- पीढ़ियों के बीच मूल्यगत अन्तर।

हालाँकि इन प्रभावों की तीव्रता सभी युवाओं में समान नहीं होती। सामाजिक वर्ग, शिक्षा, ग्रामीण-नगरीय स्थिति, परिवार तथा क्षेत्रीय संस्कृति इनके प्रभाव को निर्धारित करते हैं।

7. निष्कर्ष

वैश्वीकरण ने भारतीय युवा पीढ़ी के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन में व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। शिक्षा, तकनीक, रोजगार, सोशल मीडिया, उपभोक्तावाद एवं वैश्विक संचार ने युवाओं की सोच एवं जीवन-शैली को प्रभावित किया है। इन परिवर्तनों के कारण भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के स्वरूप में भी परिवर्तन दिखाई देता है। हालाँकि वैश्वीकरण को केवल भारतीय संस्कृति के लिए खतरे के रूप में देखना उचित नहीं होगा। भारतीय युवा वैश्विक संस्कृति के अनेक तत्वों को स्वीकार करते हुए अपनी स्थानीय सांस्कृतिक पहचान को भी बनाए रख रहे हैं। परिवार, त्योहार, भाषा, परंपरा एवं भारतीय जीवन-मूल्यों का स्वरूप बदल रहा है, लेकिन वे सामाजिक जीवन से पूरी तरह समाप्त नहीं हुए हैं।

इसलिए वर्तमान स्थिति को 'परम्परा बनाम आधुनिकता' के संघर्ष के बजाय 'परम्परा एवं आधुनिकता के बीच अन्तर्क्रिया' के रूप में समझना अधिक उपयोगी है। युवा पीढ़ी इस अन्तर्क्रिया की प्रमुख वाहक है। आवश्यकता इस बात की है कि वैश्विक ज्ञान एवं आधुनिक तकनीक को अपनाते हुए भारतीय संस्कृति के मानवीय, नैतिक, सहिष्णु एवं सामाजिक सहयोग से जुड़े मूल्यों को समकालीन सन्दर्भ में पुनर्परिभाषित किया जाए। इस प्रकार, वैश्वीकरण के दौर में भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का भविष्य उनके स्थिर रूप में बने रहने की अपेक्षा उनके परिवर्तन, अनुकूलन एवं पुनर्सृजन पर अधिक निर्भर करता है।

आज आवश्यकता इस बात की नहीं है कि युवा वैश्वीकरण से पूरी तरह दूर रहें। वैश्विक ज्ञान, विज्ञान, तकनीक एवं विचारों का उपयोग आधुनिक समाज के लिए महत्वपूर्ण है। साथ ही, अपनी सांस्कृतिक विरासत के सकारात्मक मूल्यों को समझना भी आवश्यक है। भारतीय संस्कृति के ऐसे मूल्य, जो मानवता, सह-अस्तित्व, सहयोग, परिवार, प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता, सामाजिक जिम्मेदारी एवं नैतिक जीवन पर जोर देते हैं, उन्हें आधुनिक परिस्थितियों के अनुरूप आगे बढ़ाया जा सकता है। युवा पीढ़ी के लिए चुनौती परम्परा एवं आधुनिकता में से किसी एक को चुनने की नहीं, बल्कि दोनों के बीच रचनात्मक संतुलन विकसित करने की है।

सन्दर्भ-सूची

Giddens, A., *Sociology*, Cambridge: Polity Press, 1989.

....., *The Consequences of Modernity*, California: Stanford University Press, 1990.

Ritzer, G., *Globalization: A Basic Text*, Chichester: Wiley-Blackwell, 2010.

Appadurai, A., *Modernity at Large: Cultural Dimensions of Globalization*, Minneapolis: University of Minnesota Press, 1996.

Robertson, R., *Globalization: Social Theory and Global Culture*, London: Sage Publications, 1992.

Srinivas, M. N., *Social Change in Modern India*, New Delhi: Orient Longman, 1972.

Kapadia, K. M., *Marriage and Family in India*, Bombay: Oxford University Press, 1996.

Desai, N. and Usha Thakkar, *Women in Indian Society*, New Delhi: National Book Trust, India, 2004.

Ministry of Youth Affairs and Sports, *National Youth Policy*, New Delhi: Government of India, 2014.

Ministry of Education, *National Education Policy 2020*, New Delhi: Government of India, 2020.

UNICEF, *The State of the World's Children*, New York: United Nations Children's Fund, 1979. ★